

दुआ-25

औलाद के हक में हज़रत (अ०) की दुआ

बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम

ऐ मेरे माबूद! मेरी औलाद की बक्रा और उनकी इस्लाह और उनसे मेहरामन्दी के सामान मुहय्या करके मुझे ममनूने एहसान फ़रमा और मेरे सहारे के लिये उनकी उम्माँ में बरकत और उनकी जिन्दगियों में तूल दे और उनमें से छोटों की परवरिश फ़रमा और कमज़ोरों को तवानाई दे और उनकी जिस्मानी, ईमानी और एखलाकी हालत को दुरूस्त फ़रमा और उनके जिस्म व जान और उनके दूसरे मुआमलात में जिनमें मुझे एहतेमाम करना पड़े उन्हें आफ़ियत से हमकिनार रख, और मेरे लिये और मेरे ज़रिये उनके लिये रिज़्के फ़रावाँ जारी कर और उन्हें नेकोकार उन्हें नेकोकार, परहेज़गार, रौशन दिल, हक शिनास और अपना फ़रमाबरदार और अपने दोस्तों का दोस्त व ख़ैरख्वाह और अपने तमाम दुश्मनों का दुश्मन व बदख्वाह करार दे- आमीन।

ऐ अल्लाह! उनके ज़रिये मेरे बाज़ुओं को क़वी और मेरी परेशांहाली की इस्लाह और उनकी वजह से मेरी जमीअत में इज़ाफ़ा और मेरी मजलिस की रौनक दोबाला फ़रमा और उनकी बदौलत मेरा नाम जिन्दा रख और मेरी अदम मौजूदगी में उन्हें मेरा कायम मुक़ाम करार दे और उनके वसीले से मेरी हाजतों में मेरी मदद फ़रमा और उन्हें मेरे लिये दोस्त, मेहरबान, हमहतन, मुतवज्जेह, साबित क़दम और फ़रमाबरदार करार दे। वह नाफ़रमान, सरकश, मुखालेफ़त व ख़ताकार न हों और उनकी तरबीयत व तादीब और उनसे अच्छे बरताव में मेरी मदद फ़रमा और उनके अलावा भी मुझे अपने ख़ज़ानए रहमत से नरीनए औलाद अता कर और उन्हें मेरे लिये सरापा ख़ैर व बरकत करार दे और उन्हें उन चीज़ों में जिनका मैं तलबगार हूँ। मेरा मददगार बना और मुझे और मेरी ज़ुरियत को शैतान मरदूद से पनाह दे। इसलिये के तूने हमें पैदा किया और अम्र व नहीं की और जो हुक्म दिया उसके सवाब की तरफ़ राग़िब किया और जिससे मना किया उसके अज़ाब से डराया और हमारा एक दुश्मन बनाया जो हमसे मक़ करता है और जितना हमारी चीज़ों पर उसे तसल्लत देता है उतना हमें उसकी किसी चीज़ पर तसल्लत नहीं दिया। इस तरह के उसे हमारे सीनों में ठहरा दिया और हमारे रग व पै में दौड़ा दिया। हम गाफ़िल हो जाएं मगर रवह गाफ़िल नहीं होता, हम भूल जाएं मगर वह नहीं भूलता, वह हमें तेरे अज़ाब से मुतमईन करता और तेरे अलावा दूसरों से डराता है। अगर हम किसी बुराई का इरादा करते हैं तो वह हमारी हिम्मत बन्धाता है और अगर किसी अमले ख़ैर का इरादा करते हैं तो हमें उससे बाज़ रखता है और गुनाहों की दावत देता और हमारे सामने शुबहे खड़े कर देता है

अगर वादा करता है तो झूटा और उम्मीद दिलाता है तो खिलाफ़वर्जी करता है अगर तू उसके मक़ को न हटाए तो वह हमें गुमराह करके छोड़ेगा और उसके फ़ित्नों से न बचाए तो वह हमें डगमगा देगा।

खुदाया! उस लईन के तसल्लुत को अपनी क़वत व तवानाई के ज़रिये हमसे दफ़ा कर दे और कसरते दुआ के वसीले से उसे हमारी राह ही से हटा दे ताके हम उसकी मक्कारियों से महफूज़ हो जाएं।

ऐ अल्लाह! मेरी हर दरख्वास्त को कुबूल फ़रमा और मेरी हाजतें बर ला जबके तूने इस्तेजाबते दुआ का ज़िम्मा लिया है तू मेरी दुआ को रद न कर और जबके तूने मुझे दुआ का हुक्म दिया है तो मेरी दुआ को अपनी बारगाह से रोक न दे। और जिन चीज़ों से मेरा दीनी व दुनियवी मफ़ाद वाबस्ता है उनकी तकमील से मुझ पर एहसान फ़रमा। जो याद हों और जो भूल गया हूँ जाहिर की हों या पोशीदा रहने दी हों, एलानिया तलब की हों या दरपरदा इनत माम सूरतों में इस वजह से के तुझसे सवाल किया है (नीयत व अमल की) इस्लाह करने वालों और इस बिना पर के तुझसे तलब किया है कामयाब होने वालों और इस सबब से के तुझ पर भरोसा किया है गैर मुस्तर्द होने वालों में से करार दे और (उन लोगों में शुमार कर) जो तेरे दामन में पनाह लेने के खूगर, तुझसे ब्योपार में फ़ायदा उठाने वाले और तेरे दामने इज़्जत में पनाह गुर्जी हैं। जिन्हें तेरे हमहगीर फ़ज़ल और जूद व करम से रिज़्के हलाल में फ़रावानी हासिल हुई है और तेरी वजह से ज़िल्लत से इज़्जत तक पहुंचे हैं और तेरे अद्ल व इन्साफ़ के दामन में जुल्म से पनाह ली है और रहमत के ज़रिये बला व मुसीबत से महफूज़ हैं और तेरी बेनियाज़ी की वजह से फ़कीर से गनी हो चुके हैं और तेरे तक़वा की वजह से गुनाहों, लग्ज़िशों और खताओं से मासूम हैं और तेरी इताअत की वजह से खैर व रशद व सवाब की तौफ़ीक़ उन्हें हासिल है और तेरी कुदरत से उनके और गुनाहों के दरम्यान पर्दा हाएल है और जो तमाम गुनाहों से दस्त बरदार और तेरे जवारे रहमत में मुक़ीम हैं। बारे इलाहा! अपनी तौफ़ीक़ व रहमत से यह तमाम चीज़ें हमें अता फ़रमा और दोज़ख़ के आज़ार से पनाह दे और जिन चीज़ों का मैंने अपने लिये और अपनी औलाद के लिये सवाल किया है ऐसी ही चीज़ें तमाम मुसलेमीन व मुसलेमात और मोमेनीन और मोमेनात को दुनिया व आख़ेरत में मरहमत फ़रमा। इसलिये के तू नज़दीक़ और दुआ का कुबूल करने वाला है, सुनने वाला और जानने वाला है, माफ़ करने वाला और बख़शने वाला और शफ़ीक़ व मेहरबान है। और हमें दुनिया में नेकी (तौफ़ीके इबादत) और आख़ेरत में नेकी (बेहिश्ते जावेद) अता कर, और दोज़ख़ के अज़ाब से बचाए रख।